पाठ 13 **दिसम्बर 23 - 29**

मसीही जीवन-शैली

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 23**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: रोमियों 14:16

याद वचन: "*तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे*" (रोमियों 14:10)।

अब हम रोमियों के अध्ययन के अंतिम भाग में हैं, वह किताब जिससे प्रोटेस्टेन्ट सुधार का जन्म हुआ - इसी किताब से और किसी अन्य से नहीं, सचमुच, हमें दिखलाता है कि हम प्रोटेस्टेन्ट क्यों हैं और हमें क्यों उसी रास्ते पर बने रहना चाहिए। प्रोटेस्टेन्ट के तौर पर, विशेष रूप से सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के तौर पर, हम सोला स्क्रीप्चुरा (Sola Scriptura) के सिद्धांत पर स्थिर होते हैं, विश्वास के मानदंड के तौर पर केवल बाइबल और यह केवल बाइबल से है कि हमने उसी विश्वास को सीखा है, जो सदियों पूर्व हमारे आत्मिक पूर्वजों के लिए रोम से अलग होने का कारण बना विश्वास के द्वारा उद्धार का महान सत्य, एक सच्चाई इतनी प्रभावशाली ढंग से रोमियों को पौलुस की पत्रियों में व्यक्त की गई।

संभवत: मूर्तिपूजक जेलर के प्रश्न के द्वारा सभी चीज सार किया जा सकता है, "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" (प्रेरित 16:30)।

उस प्रश्न का उत्तर हमें रोमियों में मिला - और उत्तर वह नहीं था जो लूथर के समय में कलीसिया दे रही थी। इसलिए सुधार की शुरुआत हुई, और आज हम यहाँ पर हैं।

इस अंतिम भाग में पौलुस अन्य विषयों को भी शामिल करता है, शायद अपने मुख्य विषय के केंद्र के तौर पर नहीं, फिर भी पत्री में शामिल करने के लायक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए वे हमारे लिए पवित्र ग्रंथ भी है।

पौलुस ने किस प्रकार इस पत्री का अंत किया, उसने किस प्रकार लिखा, और हमारे लिए वहाँ पर कौन-सी सच्चाई है, उत्तराधिकारी पौलुस के नहीं वरन्, सचमुच हमारे प्रोटेस्टेन्ट पुरखाओं के रहे?

रविवार **दिसम्बर 24**

विश्वास में निर्बल

रोमियों 14:1-3 में प्रश्न मांस खाने के विषय चित्रित है वह शायद मूर्तियों के आगे परोसा गया है। यरूशलेम की सभा (प्रेरित 15) ने कानून लागू किया कि अन्यजाति के हृदय परिवर्तितों को ऐसे भोजनों से दूर रहना चाहिए। परन्तु हमेशा प्रश्न यह रहा कि मांस जो आम बाजारों में बिक रहा था क्या मूर्तियों के सामने बलि होकर आता था (देखें 1कुरि० 10:25), कुछ मसीही इसके विषय बिलकुल भी परवाह नहीं करते थे; दूसरे यदि कुछ शक की गुंजाईश हुई तो शाकाहार लेना चुनते थे। मुद्दा शाकाहार के सवाल पर नहीं था न ही स्वास्थ्य पूर्ण जीवन जीने पर। और पौलुस न ही इस अनुच्छेद में समझा रहा है कि शुद्ध और अशुद्ध मांस के बीच फर्क खत्म हो गया है। यह विषय विचाराधीन नहीं है। यदि शब्द "वह सब चीजों को खा सकता है" (रोमि० 14:2) का अर्थ इस रूप में लिया गया है कि अब कोई भी जानवर शुद्ध या अशुद्ध, खाया जा सकता है, उनका गलत प्रयोग हुआ है। नये नियम के अन्य अनुच्छेदों की तुलना ऐसे प्रयोग के खिलाफ जायेगा।

इसी समय, एक निर्बल को विश्वास में "प्राप्त करने" का अर्थ है उसे पूर्ण सदस्यता और सामाजिक दर्जा देना होता है। उस व्यक्ति से तर्क नहीं किया जाना था, परन्तु अपने विचार को अधिकार देना था।

तब, रोमियों 14:1-3 से हम क्या सिद्धांत ले सकते हैं।

यह जानना महत्त्वपूर्ण भी है कि रोमियों 14:3 में पौलुस "विश्वास में निर्बल" रोमियों 14:1 के प्रति नकारात्मक बातें नहीं करता। और न ही वह इस व्यक्ति को मजबूत होने की सलाह देता। जहाँ तक परमेश्वर चिंतित है, अति सतर्क मसीही स्वीकार किया जाता है। (स्पष्ट तौर पर अति सतर्क न्याय किया गया - यह परमेश्वर के द्वारा नहीं पर अपने सह-विश्वासियों के द्वारा) "परमेश्वर ने उसे ग्रहण कर लिया है।

"जैसे हमने देखा है रोमियों 14:4 किस प्रकार विस्तार देता है?

यद्यपि हमें आज के पाठ में देखे गये सिद्धांतों को मन में रखने की जरूरत है, क्या समय और जगह नहीं है, जहाँ पर हमें कदम रखने और न्याय करने की जरूरत है, यदि नहीं तो एक व्यक्ति के हृदय में, और कम-से-कम उसके कामों पर? क्या हमें हर परिस्थिति में वापस होना है और कहना है और करना कुछ नहीं है? यशायाह 56:10 पहरेदारों को "वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते" कहता है। हम कैसे जान सकते हैं कि कब बोलना है और कब शांत रहना है? हम सही संतुलन को कैसे स्थापित कर सकते हैं?

सोमवार **दिसम्बर 25**

न्याय आसन के सामने

पढ़ें रोमियों 14:10, दूसरों को सतर्कतापूर्वक हमें न्याय करने के विषय पौलुस यहाँ पर कौन-सा कारण पेश करता है?

कभी-कभी हम दूसरों को कठोरतापूर्वक न्याय करने की ओर प्रवृत होते हैं और बहुधा हमारे साथ भी उन्हीं चीजों को हम करते हैं। अकसर जो हम करते हैं वह बुरा नहीं लगता जब दूसरे भी हमारे साथ वही करते हैं। अपनी पाखंडता के द्वारा हम स्वयं को मूर्ख बना सकते हैं, परन्तु परमेश्वर को नहीं, जिसने हमें बताया : "दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आँख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि आ मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ?" (मत्ती 7:1-4)।

पुराने नियम से कथन का अभिप्राय क्या है जिसे पौलुस ने यहाँ पर पेश किया? (रोमि० 14:11)।

यशायाह 45:23 का दृष्टान्त विचार को समर्थन करता है कि सभों को न्याय के सामने प्रकट होना आवश्यक है। "प्रत्येक घुटना" और "प्रत्येक जीभ" बुलावे को वैयक्तीकृत करता है। संकेत यह है कि हरेक को अपने जीवन और कर्मों के प्रति जवाबदेह होगा (रोमियों 14:12)। कोई भी दूसरे के लिए जवाबदेह नहीं हो सकता। इस महत्त्वपूर्ण अर्थ में, हम अपने भाई के रखवाले नहीं।

प्रसंग को मन में रखते हुए, आप कैसे समझते हैं कि पौलुस रोमियों 14:14 में क्या कह रहा है?

मुद्दा अभी भी भोजन है जो मूर्तियों के आगे परोसा गया है। विषय स्पष्ट है, शुद्ध और अशुद्ध भोजन के बीच फर्क नहीं। पौलुस कह रहा है कि भोजन खाने में अपने आप

में कोई गलती नहीं है जो मूर्तियों के आगे रखी गई हो। आखिरकार मूर्ति क्या है? यह कुछ नहीं है (देखें 1कुरि० 8:4), अत: कौन परवाह कर रहा है यदि कोई मूर्तिपूजक मेंढक या सांड़ की मूर्ति के आगे भोजन परोसा हो?

एक व्यक्ति को अपने विवेक को अपवित्र करने के लिए नहीं बनना चाहिए, विवेक बहुत ज्यादा संवेदनशील है। इस तथ्य को "सामर्थी भाईयों" ने स्पष्ट रूप से नहीं समझा। उन्होंने कमजोर भाईयों की निष्ठा को तुच्छ जाना और अपने रास्ते में बाधा खड़ी की ।

हो सकता है, मसीह के लिए आपके उत्साह में आप खतरे में हो सकते हैं जिसके विषय में पौलुस यहाँ पर चेतावनी दे रहा है। दूसरों के विवेक में सहभागी न होने के लिए हमें क्यों सतर्क होना चाहिए, हमारे उद्देश्य कितने ही भले क्यों न हो?

मंगलवार **दिसम्बर 26**

अपमान नहीं

पढ़ें रोमियों 14:15-23 (इसे भी देखें 1कुरि० 8:12,13)। पौलुस जो कह रहा है उसके सार के निचली पंक्ति पर सारांश प्रस्तुत करें। इस अनुच्छेद से हम क्या सिद्धांत ले सकते हैं जिसे हम हमारे जीवन के हर क्षेत्र में लागू कर सकते हैं?

रोमियों 14:17-20 में पौलुस मसीहियत के विभिन्न पहलूओं को सही परिप्रेक्ष्य में डाल रहा है। यद्यपि खान-पान महत्त्वपूर्ण है, मसीहियों को कुछ लोगों ने, मांस जो संभवत: मूर्तियों के आगे बलि की गई हो, शाकाहर बनने के चुनाव पर विवाद नहीं करना चाहिए। इसके वजाय पवित्र आत्मा में आनन्द शान्ति एवं धार्मिकता पर उन्हें ध्यान लगाना चाहिए। आज हमारी कलीसिया में खान-पान के सवालों पर इस विचार को कैसे लागू कर सकते हैं? यद्यपि स्वास्थ्य संवाद, और खास कर खान-पान पर शिक्षाएँ हमारे लिए आशीष का कारण हो सकती है, हर कोई इस विषय को वैसा ही नहीं देखता, और उन विभिन्नताओं को हमें आदर करने की जरूरत है।

रोमियों 14:22 में लोगों को उनके स्वयं के विवेक में छोड़ने के विषय बातों के बीच में, पौलुस बहुत ही रोचक इत्तलानामा जोड़ता है : "धन्य है वह जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता।" पौलुस यहाँ पर कौन-सी चेतावनी दे रहा है? बाकी जो वह इस संदर्भ में कह रहा है यह कैसे संतुलित करता है?

क्या आपने किसी को यह कहते सुना है, "यह किसी और का मामला नहीं कि मैं क्या खाऊँ या क्या पहनूँ या किस प्रकार के मनोरंजन में पड़ूँ"? क्या यह ऐसा है? हम में से कोई भी खालीपन में नहीं रहता। हमारे कार्य, शब्द, गति और आहार भी दूसरों को प्रभावित करते हैं, इसमें भला हो या बुरा। इसे देखना कठिन नहीं है कि यह कैसे हो रहा है। यदि आपको कोई देखता है यह आप को गलत करते हुए देखता है, आपको देखकर वही चीज करने को वह प्रभावित होता है। यदि हम अन्यथा सोचते हैं तो हम स्वयं को मूर्ख बनाते हैं। यह तर्क करना कि आपने उस व्यक्ति को जबरदस्ती नहीं किया महत्त्वहीन है। मसीहियों के तौर पर हमारे पास, एक दूसरे के लिए जिम्मेदारियाँ हैं, और यदि हमारे उदाहरण किसी को गलत रास्ते में अग्रसरित करता है तो हम दोषी हैं।

आप किस प्रकार के उदाहरण पेश करते हैं? किसी को साथ लेकर क्या आप आरामदायक महसूस करते हैं, खासकर युवा लोग या नये विश्वासीगण आपके उदाहरण को हर क्षेत्र में अनुसरण कर रहे हैं? आपके विषय में आपको जवाब क्या कहता है?

बुधवार **दिसम्बर 27**

दिनों का अनुपालन

दूसरों को न्याय न करने के इस बहस में हमारी अपेक्षा कौन किसी चीज को विभिन्न तरीके से दृष्टिपात करेगा, और दूसरों के लिए ठेस का पत्थर न होकर हमारी क्रियाओं से कौन नाराज होगा, खास दिनों के मुद्दे को पौलुस
एहसास कराता है कि कुछ पालन करना चाहते हैं और दूसरे नहीं।

पढ़ें रोमियों 14:4-10, पौलुस जो यहाँ पर कह रहा है हमें किस प्रकार समझना है? क्या यह चौथी आज्ञा के विषय कुछ कहता है? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

पौलुस किन दिनों के विषय बातें कर रहा है? क्या प्रारंभिक कलीसिया में निश्चित दिनों को मानने और न मानने पर विवाद था? स्पष्ट रूप से ऐसा था। गलातियों 4:9,10 में हम इस प्रकार के विवाद का एक नमूना पाते हैं, जहाँ पर पौलुस "दिनों, एवं महीनों, एवं समयों, और वर्षों" के पालन पर गलातिया के मसीहियों को फटकारता है। जैसा कि हमने अध्याय 2 में टिप्पणी की गई है। कलीसिया में कुछ ने खतना होने और मूसा की व्यवस्था के दूसरे नियमों को मानने में गलातिया के मसीहियों का पीछा किया था। पौलुस को डर था कि ये विचार रोमी कलीसिया को क्षति पहुँचा सकता था। परन्तु संभवत: रोम में यह खास यहूदी मसीही थे जिनका कठिन भरा समय था स्वयं का पीछा करते हुए कि उन्हें यहूदी त्योहारों को मानने की अब जरूरत नहीं है। पौलुस यहाँ पर कह रहा है : इस विषय में जो आपको अच्छा लगे करें; महत्त्वपूर्ण बिन्दु उन्हें न्याय करना नहीं है जो विषय को आपसे अलग देखते हैं। स्पष्ट रूप से कुछ मसीहियों ने सुरक्षित पक्ष में होने के लिए यहूदियों के एक या अधिक त्योहारों को मानने का निर्णय लिया। पौलुस की सलाह है : उन्हें इसे करने दें यदि वे राजी होते हैं तो उन्हें करने देना चाहिए।

रोमियों 14:5 में सप्ताहिक सब्त को लाने के लिए, जैसे कुछ तर्क करते हैं, यह बेबुनियाद है। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि पौलुस चौथी आज्ञा की ओर शांत प्रवृति में बातें कर रहा है? जैसे हमने पूरे त्रिमास में देखा है पौलुस ने व्यवस्था को मानने पर अधिक जोर दिया इसलिए वह अवश्य ही सब्त आज्ञा को उसी वर्ग में लगाने को नहीं जा रहा था जैसे कि लोग भोजन करने के विषय में चिंतित थे जो संभवत: मूर्तियों के आगे परोसा गया था । यद्यपि सामान्यतय: ये अवतरण उदाहरण के रूप में व्यवहृत होते हैं, यह दिखाने के लिए कि सातवाँ दिन सब्त अब बाध्यकारी नहीं हैं, वे ऐसी चीज नहीं कहते हैं। उस तरीके से इनका व्यवहार एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है जिसका पतरस ने उल्लेख किया कि लोग पौलुस के लेखों से काम चला रहे थे : "वैसे ही उसने अपने पत्री में भी इन बातों की चर्चा की है जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाम का कारण बनाते हैं" (2पत० 3:16)

सब्त के साथ आपका क्या अनुभव रहा है? क्या यह आशीष का कारण रहा है जैसा इसको होना था? आप कौन-से बदलाव कर सकते हैं ताकि अधिक पूर्णता से अनुभव कर सकें जोआपको यहोवा सब्त में प्रदान करता है?

बृहस्पतिवार **दसम्बर 28**

अंतिम शब्द

पढ़ें रोमियों 15:1-3, इस अनुच्छेद में कौन-सी महत्त्वपूर्ण मसीही सच्चाई पाई जाती है?

किस तरह से यह अनुच्छेद यीशु के अनुगामी होने के अर्थ को इतना अधिक

संजोए हुए है?

ऐसी ही अवधारणा (विचार) कौन-से दूसरे पदस्थल सिखलाते हैं? अधिक महत्त्वपूर्ण आप स्वयं कैसे इस सिद्धांत को जीते हैं?

जैसा पौलुस ने अपनी पत्री के अंत में उल्लेख किया, कौन-से विभिन्न वचनों को उसने कहा? रोमि० 15:5,6,13,33 ।

धीरज का परमेश्वर का अर्थ है परमेश्वर जो अपनी संतान को दृढ़तापूर्वक सहन करने में मदद करता है। शब्द "धैर्य" ह्यूपोमोन (hupomone) का अर्थ है "सहनशील", "स्थिर सहनशीलता"। शब्द "सांत्वना" का रूपांतरण "उत्साह" हो सकता है। उत्साह का परमेश्वर वह परमेश्वर है जो उत्साहित करता है। आशा का परमेश्वर वह परमेश्वर है जिसने मानव जाति को आशा दी है। वैसा ही शान्ति का परमेश्वर वह परमेश्वर है जो शान्ति देता है जिसमें एक शान्ति पाता है।

बहुत से व्यक्तिगत अभिवादनों के साथ, पौलुस अपनी पत्री को किस प्रकार अन्त करता है? रोमि० 16:25-27 ।

पौलुस परमेश्वर की प्रशंसा की एक महिमामय आरोपण में अपनी पत्री का अन्त करता है। परमेश्वर वह है जिसमें रोमी मसीही और समस्त मसीही सुरक्षापूर्वक परमेश्वर के उद्धार किये हुए बेटे एवं बेटियों के तौर पर अपने पक्ष को पक्का करने के लिए अपने विश्वास को स्थापित करते हैं, विश्वास के द्वारा न्यायोचित ठहराये गये और अब परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाये जाते हैं।

हम जानते हैं कि पौलुस एक खास समय पर एक खास परिस्थिति के जवाब में इस पत्री को लिखने के लिए यहोवा द्वारा उत्प्रेरित हुआ। जो हम नहीं जानते वे हैं पूरे विवरण जो पौलुस को भविष्य के विषय यहोवा ने प्रकट किये ।

जी जहाँ, पौलुस "धर्म त्याग" 2 थिस्लु० 2:3) के विषय नहीं जानता था, फिर भी जितना वह जानता था अवतरण नहीं बतलाया है। संक्षिप्त में हम नहीं जानते यदि पौलुस का उसकी भूमिका और उसकी पत्रियों के कोई संकेत थे, खासकर यह पत्री, अंतिम घटनाओं में हो सकती थी। एक अर्थ में इसके कोई मायने नहीं। जो मायने रखता है वह इन अवतरणों में प्रोटेस्टेन्टवाद का जन्म और उनमें जो यीशु में विश्वस्त रहना चाहते हैं जिसमें वे अपने विश्वास और समर्पण को आधार देते हैं, जैसा कि "पशु के बाद" संसार चकित होता है (प्रका० 13:3)।

शुक्रवार **दिसम्बर 29**

अतिरिक्त अध्ययनः एलेन जी० ह्वाईट को टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 5 में "यूनिटी एण्ड लव इन द चर्च", पेज 477, 478 ; "लव फॉर द एरिंग", पेज 604-606 को पढ़ें; द मिनिस्ट्री ऑफ हीलिंग, पेज 719, "हेल्पींग द टेम्पेस्ट" पेज 166, द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंट्री वॉल्यूम 6 पढ़ें।

"परमेश्वर के लोगों के खतरे को मुझे दिखाया गया, भाई और बहन ह्वाईट के देखने में और सोचने में कि वे उनके पास अपने बोझों एवं उनके सलाह के लिए आना चाहिए। यह ऐसा नहीं होना चाहिए । वे अपने दयालु, प्रेमी उद्धारकर्त्ता के द्वारा आमंत्रित किये गये हैं वे उसके पास आये, जब चिंता और भार से दबे हुए हों और वह उन्हें छुटकारा देगा.... बहुत लोग पूछ-ताछ के लिए हमारे पास आते हैं : क्या मैं यह करूँ? क्या मैं उस उधम में लग जाऊँ? अथवा पहिरावे के विषय में क्या मैं इसे या उसे पहनूँ? मैं उन्हें जवाब देती हूँ : आप मसीह का चेला बनने को स्वीकार करें। अपनी बाइबलों को पढ़ें। सतर्कता से और प्रार्थनापूर्वक हमारे प्यारे उद्धारकर्त्ता की जीवनी को पढ़ें जब उसने

इस पृथ्वी पर लोगों के बीच रहा। उसके जीवन की नकल करें, और आप संकीर्ण रास्ते से आप स्वयं को भटके हुए नहीं पाएँगे। हम पूरी तरह अपने विवेक के जैसा होने से इन्कार करते हैं। यदि हम आपसे कहें कि क्या करना है आप हमें देखेंगे कि हम आप को निर्देशित करना है, इसके बजाय कि स्वयं यीशु के पास सीधे जाएँ।" - *एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 2, पेज 118, 119 ।*

"हमारे कर्त्तव्यों की जिम्मेदारी किसी के ऊपर हमें नहीं डालना है, लेकिन पवित्र का इन्तजार कीजिए वह हमें बतायेंगे कि क्या करना है। हम मानवता के ऊपर सलाह के लिए निर्भर नहीं कर सकें। यहोवा हमें हमारी कर्त्तव्य सिखायेगा वैसी ही इच्छा के साथ जैसा वह किसी दूसरे को सिखायेगा .... जो किसी भी समय कुछ भी नहीं करने का निर्णय लेते हैं वह परमेश्वर को अप्रसन्न करेगा, वे अपने मुकदमे को उसके सामने पेश करने के बाद जानेंगे कि कौन-सा मार्ग का पीछा करना है।" - *द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 668*

"यहाँ पर कलीसिया में वे जो पूरी तरह व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर झुके हुए हैं को जानने में असमर्थ महसूस करते हैं कि आत्मा की उपस्थिति मानव की अगुवाई कर सकती हैं, स्वयं में अति अहम विश्वास और स्वयं के न्याय में विश्वास, न कि अपने भाईयों के उच्च सम्मान एवं सलाह को आदर करेगा।" - *द एक्ट्स ऑफ अपोसल्स, पेज 163, 164 ।*

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

इस सप्ताह के कुछ विषयों को प्रस्तुत करें, मसीहियों के तौर पर हम कैसे सही संतुलन पाते हैं :

- जो हम विश्वास करते हैं उसपर विश्वस्त रहकर, दूसरों को न्याय न करते हुए, हमारी अपेक्षा कौन चीजों को भिन्नता से देखता है?
- हमारे स्वयं के अंत:करण के प्रति विश्वस्त रहकर और दूसरों के लिए अंत:करण होना छोड़कर, उसी समय उन्हें मदद करना चाहना जिन्हें हम विश्वास करते हैं कि वे गलत हैं? हम कब बात करें और कब शांत रहें? हम कब दोषी होते हैं यदि हम शांत होते हैं? *(शांत रहने के कारण दोषी होते हैं)*
- प्रभु में स्वतंत्र होकर और फिर भी उसी समय हमारी जिम्मेदारी को जानकर उनके निमित्त अच्छे उदाहरण बन कर जो हमें खोजते हों ।